अभिक्षमता (Aptitude) :—

अभिक्षमता (Aptitude) एक महत्वपूर्ण पद है जिसका अर्थ किसी खास विषय या क्षेत्र में ज्ञान, अभिरुचि, कौशलता आदि विकसित करने की क्षमता से होता है। दूसरे शब्दों में अभिक्षमता किसी विषय या क्षेत्र में ज्ञान हासिल करने या सीखने की अन्तर्निहित शक्ति (Potential) है। किसी छात्र की अभिक्षमता को जानकर शिक्षक आसानी से उसके भविष्य के निष्पादन के बारे में पूर्वानुमान (Prediction) लगा सकते हैं। अभिक्षमता को फ्रीमैन (1962) ने परिभाषित करते हुए कहा है, "उन गुणों के संयोग जिनसे कुछ विशेष ज्ञान एवं संगठित अनुक्रियाओं के सेट की कौशलता जैसे कोई भाषा, बोलना, गायक बनना, यांत्रिक कार्य करना आदि को (प्रशिक्षण के साथ) सीखने की क्षमता का पता चलता है, अभिक्षमता कहा जाता है।"

Scanned with CamScanner

ज्ञान (Knowledge) — सामान्यत ज्ञान से तात्पर्य किसी वस्तु या विषय के बारे में यथार्थ जानकारी से है। अर्थात ज्ञान शब्द का प्रयोग किसी वस्तु या विषय के सम्बन्ध मे उसके वर्णन से है। ज्ञान का प्रयोग भौतिक जगत एव आध्यात्मिक जगत दोनो के सम्बन्ध मे होता है। ज्ञान शब्द की कोई व्यापक परिभाषा देना कठिन है क्योकि दर्शन की विभिन्न विचार धाराओ ने इसकी व्याख्या अपने अपने मतानुसार किया है। फिर भी विद्वानो मे एक मतैक्यता यह है कि सत्य और ज्ञान एक ही सिक्के के दो पहलू है अर्थात सत्य की वास्तविकता ज्ञान कहलाती है।

Scanned with CamScanner

ज्ञान को अनुभूति मानते हुए इसकी व्याख्या इस प्रकार से की जा सकती है कि ज्ञान वह अनुभूतियां है जो इन्द्रियानुभूति तथा इन्द्रियातीत होती है।

अतः इस आधार पर हम ज्ञान की व्याख्या निम्नलिखित तीन प्रकार से कर सकते हैं -

1- ज्ञान जानकारी की सत्यता है अर्थात जानकारी की सत्यता ही ज्ञान

2- ज्ञान जानकारी की सत्यता मे विश्वास है अर्थात ~~यदि~~ जानकारी की सत्यता में विश्वास ही ज्ञान है। यदि हमे विषय वस्तु के बारे जानकारी है और यदि जानकारी सत्य है और उसमे हमारा विश्वास है तो उसे ज्ञान कहते है।

3- ज्ञान जानकारी की सत्यता के लिए पर्याप्त प्रमाण है।

Scanned with CamScanner

ज्ञान की सम्प्राप्ति या प्राप्ति (Attainment of Knowledge) अधिगम से विद्यार्थी मे होने वाले व्यवहार परिवर्तन के फलस्वरूप विद्यार्थी में निश्चित धारणा या ज्ञान की सम्प्राप्ति होती है जो संज्ञानात्मक भावात्मक एवं क्रियात्मक किसी भी अधिगम अनुक्रीत से सम्बन्धित हो सकता है। विद्यार्थी अधिगम मुख्यत: दो तरीको से करते है। पहला एक निष्क्रिय अधिगमकर्ता के रूपमे और दूसरा एक सक्रिय अधिगमकर्ता के रूप मे। एक निष्क्रिय अधिगमकर्ता में स्मरण और आ अवबोध पर ही केन्द्रित रहता है जो विद्यार्थी विभिन्न परिस्थियो से अभिगमित करता है जैसे- पुस्तक या लेख पढ़कर, भाषण या व्याख्यान सुनकर तथा अवलोकन करके।

सक्रिय अधिगमकर्ता रूप मे अधिगम क्रिया करने या परीक्षण द्वारा सम्पन्न होता है, इसमे विद्यार्थी स्वयं क्रिया सम्पन्न करके या क्रिया में सक्रिय भागीदार रहते हुए

Scanned with CamScanner

या अपनी त्रुटियो मे परिमार्जन करते हुए और अपनी आत्म अभिप्रेरणा, क्षमता तथा योग्यता के आधार पर अधिगम करता है।

कौशलो का अर्जन या अभिग्रहण (Acquisition of Skills) :—

एक कौशल विशिष्ट व्यवहारो का वह समुच्चय होता है जिसमे एक विशिष्ट पदो या सोपानो के तन्त्र का विद्यार्थी सुनिश्चित क्रम में अनुप्रयोग करते हुए अधिगम करता है। अधिगम की अपेक्षित सफलता कौशल की संपादन क्षमता पर निर्भर करती है अर्थात कोई विद्यार्थी जितनी कम त्रुटियो के साथ कौशल का संपादन कर लेता है उसे उस कौशल मे उतना ही दक्ष या प्रवीण माना जाता है। कौशलो के अर्जन में तीनो अधिगम अनुक्षेत्रो अर्थात संज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक सम्मिलित प्रभाव रहता है।

जब कोई व्यक्ति या विद्यार्थी किसी नए कौशल का अधिगम करता है तब उस कौशल का विकास अधिगम की तीन अवस्थाओ पर आधारित होता है। ये तीन अवस्थाए निम्न है—

1- संज्ञानात्मक (Cognitive)
2- साहचर्य या सहचारी (Associative)
3- स्वायत्त (Autonomous)

कौशल की प्रत्येक अवस्था की अपेक्षित प्रतिपुष्टि, प्रदर्शन एवं अभ्यास की विभिन्न विशेषताए होती है।

Scanned with CamScanner